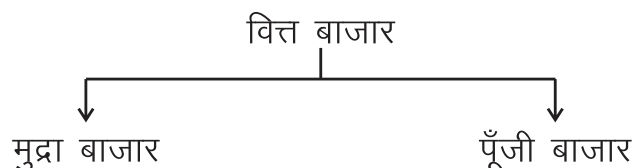


वित्त बाजार (Finance Market)

वित्त बाजार दो प्रकार का होता है—



मुद्रा बाजार :- इसमें ऐसी प्रतिभूतियों की खरीद-बिक्री की जाती है जिनकी परिपक्वता अवधि एक वर्ष से कम होती है।
जैसे— वाणिज्यिक पत्र, ट्रेजरी बिल आदि।

यह एक ऐसा बाजार जहाँ धन का लेन देन किया जाता है।

कंपनियाँ यहाँ पूँजी की व्यवस्था करने के लिए आती हैं तथा निवेशक यहाँ निवेश करने के लिए आते हैं।

पूँजी बाजार :- इसमें ऐसी प्रतिभूतियों की खरीद-बिक्री की जाती है जिनकी परिपक्वता अवधि एक वर्ष से अधिक होती है।
जैसे— सरकारी प्रतिभूतियाँ, शेयर आदि।

पूँजी की व्यवस्था दो प्रकार से की जा सकती है —

- (1) ऋण लेकर
- (2) हिस्सेदारी बेचकर

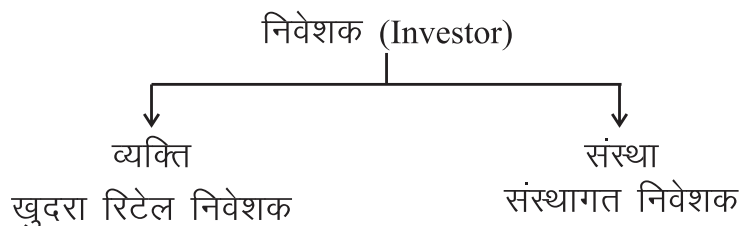
निवेश भी दो प्रकार से किया जा सकता है—

- (1) **ऋण देकर :-** इसके बदले निवेशक को ब्याज मिलता है। (अपेक्षाकृत कम जोखिम)
 - (2) **हिस्सेदारी खरीदकर :-** इसके बदले निवेशक को लाभांश (Dividend) मिलता है। (अपेक्षाकृत अधिक जोखिम)
- पूँजी दो प्रकार की होती है।



स्थिर पूँजी :- यह दीर्घकालिक निवेश होता है, जैसे— भूमि, मशीन इमारत आदि।

कार्यशील पूँजी :- यह दिन प्रतिदिन के खर्च के लिए होती है। जैसे— वेतन, रख-रखाव, कच्चा माल आदि।



कंपनी :- यह एक व्यावसायिक संस्था होती है जिसकी स्थापना व्यावसायिक गतिविधियों को पूरा करने के लिए की जाती है। कंपनी की स्थापना कंपनी अधिनियम, 2013 के तहत की जाती है।

लिमिटेड कंपनी :- वह कंपनी जिसमें ऋणदाता के अधिकार सीमित होते हैं अर्थात् ऋण की वसूली कंपनी की सम्पत्ति से की जा सकती है परन्तु मालिक की सम्पत्ति से नहीं की जा सकती।

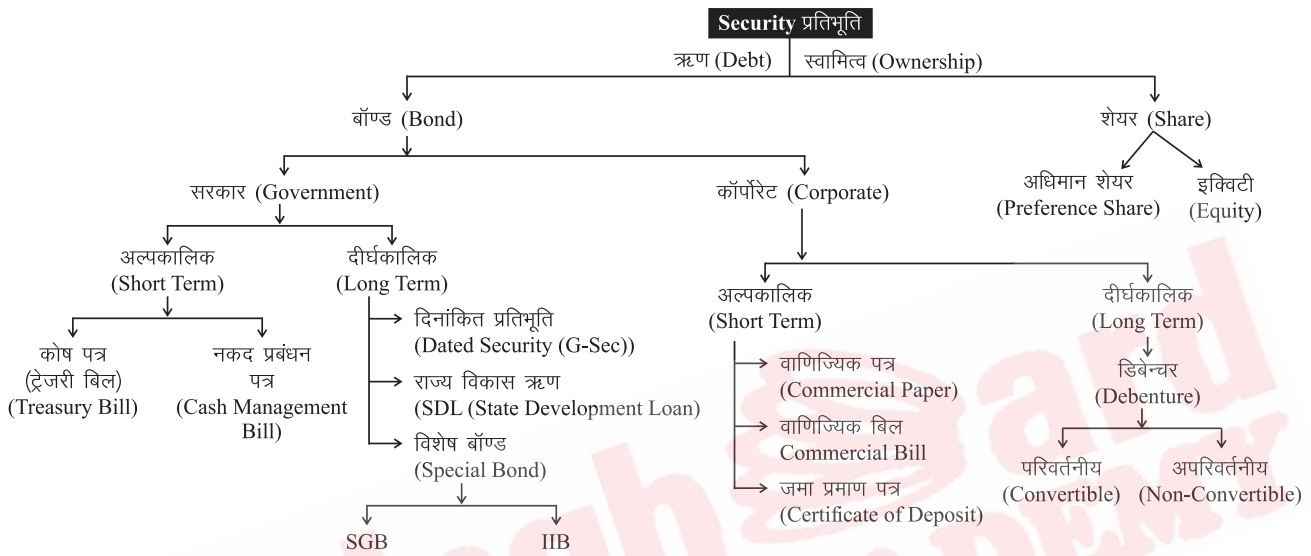
लिमिटेड कंपनियाँ मुख्यतः : तीन प्रकार की होती हैं —

- (1) **One Person Company :-** इसमें केवल एक व्यक्ति शेयरधारक हो सकता है।

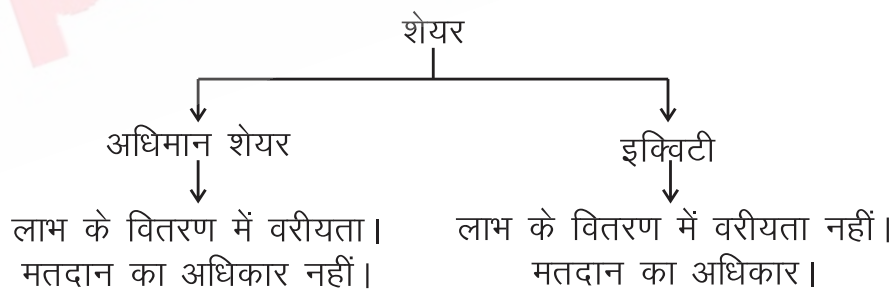
(2) **Private Limited Company** :- इसमें 2 से 200 व्यक्ति शेयरधारक हो सकते हैं परन्तु कंपनी के शेयर, शेयर बाजार में नहीं बेचे जा सकते।

(3) **Public Limited Company** :- इसमें न्यूनतम 7 व्यक्ति शेयर धारक होने चाहिए तथा अधिकतम की कोई सीमा नहीं है। कंपनी के शेयर, शेयर बाजार में बेचे जा सकते हैं। इस कंपनी की स्थापना **"कंपनी अधिनियम 2013"** के तहत की जाती है।

प्रतिभूति :- वित्त बाजार में जब धन का लेन-देन किया जाता है, कंपनी के द्वारा प्रतिभूति जारी की जाती है तथा निवेशक के द्वारा प्रतिभूति खरीदी जाती है।



शेयर :- इसमें निवेशक कंपनी में हिस्सेदार बन जाता है, निवेशक को लाभ में हिस्सा दिया जाता है, जिसे लाभांश कहा जाता है। ये दो प्रकार के होते हैं – (1) अधिमान शेयर, (2) इक्विटी



- अधिमान शेयर संख्या में कम होते हैं और ये शेयर प्रमोटर्स के पास होते हैं।
- **Authorised Capital** :- किसी कम्पनी को जिस अधिकतम मूल्य के शेयर जारी करने की अनुमति मिलती है।
- **Issued Capital** :- जितने मूल्य के शेयर जारी किए जाते हैं।
- **Subscribed Capital** :- रु. लोग जितनी पूँजी के शेयर खरीदने के लिए आवेदन करते हैं।
- **Paid-up Capital** :- शेयर जारी करने के बाद कम्पनी को प्राप्त कुल पूँजी।

1. **IPO (Initial Public Offer)** :- जब कोई कंपनी पहली बार अपने शेयर सामान्य निवेशक के लिए जारी करती है तब इस प्रक्रिया को आईपीओ कहा जाता है। आईपीओ के लिए एसईबीआई की अनुमति आवश्यक होती है।

2. **FPO (Follow on Public Offer)** :- IPO जारी करने के कुछ समय बाद यदि कंपनी कुछ अतिरिक्त शेयर जारी करती है, तब इस प्रक्रिया को FPO कहा जाता है।

3. **Right Issue** :- जब कंपनी शेयर बाजार में पुरानी हो जाती है, तब वह कुछ अतिरिक्त शेयर जारी कर सकती है। ये शेयर पहले से मौजूद शेयर धारकों को ही उपलब्ध होते हैं। इस प्रक्रिया को Right Issue कहते हैं।
4. **Buy Back** :- जब कम्पनी शेयर बाजार से अपने शेयर पुनः खरीद लेती है।
5. **अधिगोपन** :- जब भी कंपनी आईपीओ लेकर आती है, तब एक वित्तीय संस्थान से आईपीओ को अधिगोपन करवाया जाता है। वित्तीय संस्था कंपनी को यह गारंटी देती है कि उसके सभी शेयर बाजार में बिक जाएंगे। यदि ऐसा नहीं होता है तब बचे हुए शेयर अधिगोपन के द्वारा खरीदे जाएंगे।
6. **Book Building** :- जब कंपनी आईपीओ लेकर आती है तब शेयर की न्यूनतम और अधिकतम कीमत निर्धारित की जाती है। इसके लिए एक सर्वे करवाया जाता है, शेयर का आवंटन एक लॉटरी के माध्यम से किया जाता है, इस प्रक्रिया को Book Building कहा जाता है।
7. **शेयर केपिटल** :- वह पूंजी जो कि शेयर जारी करने से कम्पनी को प्राप्त होती है, शेयर केपिटल कहलाती है।

पूंजी बाजार (Capital Market)

1. **प्राथमिक बाजार** :- इसमें नई प्रतिभूतियां जारी की जाती है जिसके लिए आईपीओ, एफपीओ, Right Issue आदि का प्रयोग किया जाता है। इसका नाम तो कोई नाम होता है और ना कोई स्थान।
- ❖ **Stag** :- वे निवेशक जो प्राथमिक शेयर बाजार में निवेश करते हैं, स्टैग कहलाते हैं। जैसे— आईपीओ, एफपीओ में निवेश करना।
2. **द्वितीयक बाजार** :- इसमें ऐसी प्रतिभूतियों का लेन-देन किया जाता है जो कि पहले से ही प्राथमिक बाजार में जारी हो चुकी है।
- **भारत में दो मुख्य वित्त बाजार हैं** — (i) BSE (Bombay Stock Exchange), (ii) NSE (National Stock Exchange)
- इनके अतिरिक्त क्षेत्रीय स्टॉक एक्सचेंज भी हैं परन्तु उतने प्रचलित नहीं हैं। **जैसे—** कलकत्ता स्टॉक एक्सचेंज, जयपुर स्टॉक एक्सचेंज
- ❖ **बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज** :- स्थापना 1875
- यह एशिया का सबसे पुराना स्टॉक एक्सचेंज है।
- यह बाजार पूंजी और टर्नओवर के आधार पर भारत का दूसरा सबसे बड़ा स्टॉक एक्सचेंज है।
- $\text{बाजार पूंजी} = \text{No. of shares} \times \text{Price of one share}$
- यह Retail Investor के बीच अधिक प्रचलित है इसलिए इसमें लेन-देन की संख्या अधिक है।
- इसका मुख्य सूचकांक 'सेंसक्स' है, जो कि BSE में सूचीबद्ध 30 बड़ी कम्पनियों की शेयर कीमतों के औसत उतार-चढ़ाव को दर्शाता है।
- इसकी शुरुआत 1986 में की गई थी।

अन्य सूचकांक :-

- BSE 100 — इसमें 100 कम्पनियाँ शामिल हैं।
- BSE 200 — इसमें 200 कम्पनियाँ शामिल हैं।
- ❖ **NSE (National Stock Exchange)**
- **स्थापना** :- 1992 (फेरवानी समिति की सिफारिश पर)
- **मुख्यालय** :- मुम्बई
- यह बाजार पूंजी और टर्न ओवर के आधार पर भारत का सबसे बड़ा स्टॉक एक्सचेंज है।
- यह संस्थागत निवेशकों के बीच अधिक प्रचलित है।
- भारत में इलेक्ट्रॉनिक ट्रेडिंग की शुरुआत इसके द्वारा की गई।
- इसका प्रमुख सूचकांक 'NIFTY (NSE + FIFTY)' है।
- यह NSE में सूचीबद्ध 50 बड़ी कंपनियाँ के शेयर कीमतों की औसत उतार-चढ़ाव को दर्शाता है।

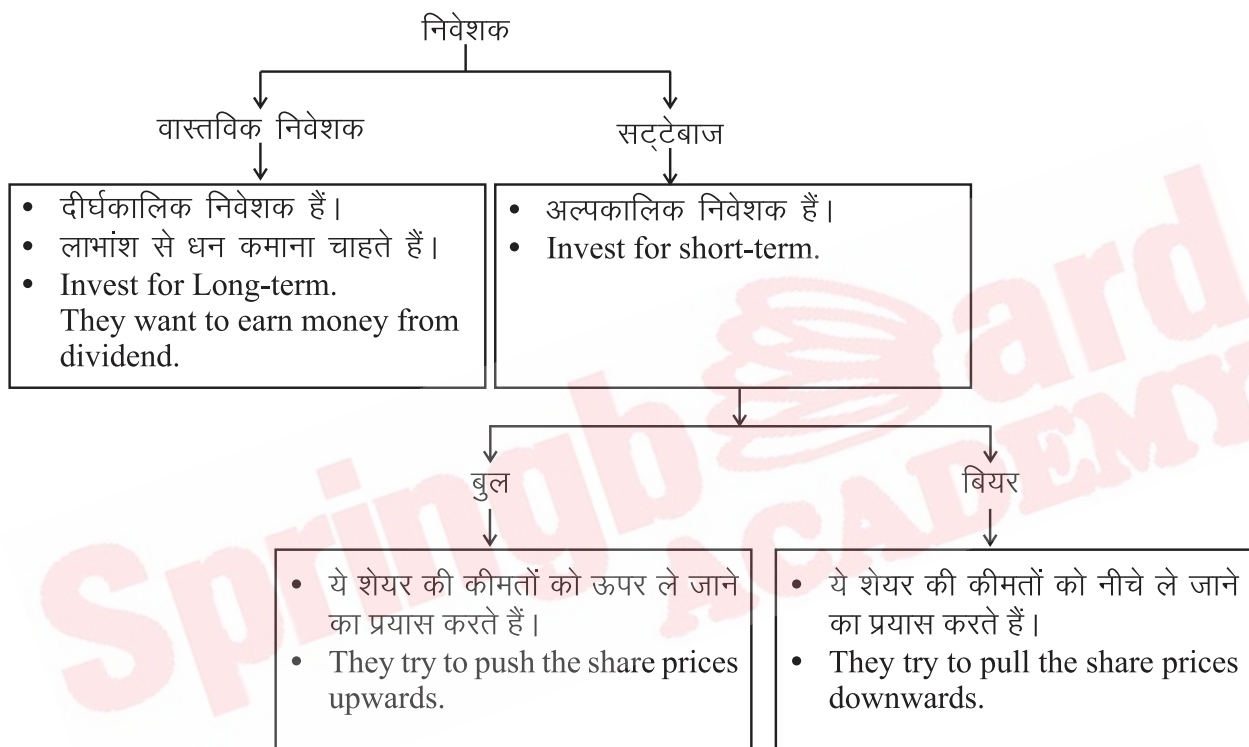
अन्य सूचकांक –

- Junior NIFTY (NIFTY NEXT FIFTY) : 51-100 बड़ी कंपनियाँ
- Bank NIFTY – इसमें 12 बड़े बैंक शामिल है।

अन्य तथ्य –

- दुनिया का सबसे बड़ा स्टॉक एक्सचेंज न्यूयॉर्क स्टॉक एक्सचेंज है जहाँ का मुख्य सूचकांक Dow Jones है।
- न्यूयॉर्क में स्थित एक अन्य स्टॉक एक्सचेंज NASDAQ है इसमें ५५ कंपनियाँ मुख्य रूप से सूचीबद्ध है और INFOSYS भारत की पहली कंपनी थी जो कि NASDAQ में सूचीबद्ध है।
- दुनिया का पहला स्टॉक एक्सचेंज नीदरलैंड में खोला गया जिसका नाम Amsterdam Stock Exchange था।

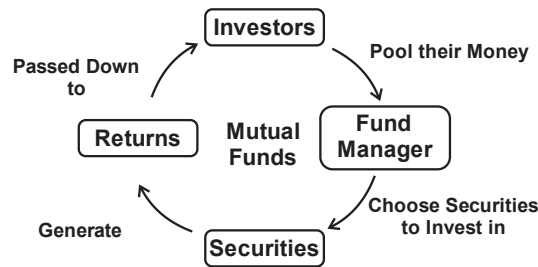
निवेशक:- शेयर बाजार में दो प्रकार के निवेशक होते हैं-



ट्रेडिंग :- शेयर बाजार में शेयर की खरीद और बिक्री ट्रेडिंग कहलाती है। ट्रेडिंग दो प्रकार की होती है –

1. **स्पॉट ट्रेडिंग :-** जिस समय सौदा किया जाता है उसी समय में इसे पूरा भी किया जाता है इस पर T+1 का नियम कार्य करता है।
2. **Future Trading :-** ये भविष्य के सौदे होते हैं जिन्हें एक निश्चित तारीख पर पूरा किया जाता है इसके लिए खरीददार को टोकन राशि जमा करनी होती है।
 - **Future Option :-** खरीददार को यह विकल्प दिया जाता है कि वह सौदे को रद्द भी कर सकता है परन्तु टोकन राशि नहीं लौटायी जाती।
 - **Short Selling :-** Short Seller के पास शुरुआत में कोई शेयर नहीं होते है, वह Broker से शेयर उधार ले लेता है तथा उन्हें शेयर बाजार में बेचता है, जिसके कारण शेयर की आपूर्ति बढ़ जाती है तथा कीमते गिरने लगती है कम कीमतों पर पुनः शेयर खरीद लिये जाते है तथा उतवामत को लौटा दिये जाते हैं।
 - **आर्बिट्रेज :-** एक ही कंपनी के शेयर अलग-अलग शेयर बाजार में खरीदे और बेचे जा सकते है। जिस बाजार में कीमतें कम होती है वहाँ से शेयर खरीदे जाते है तथा जिस बाजार में कीमतें अधिक होती है उस में बेच दिये जाते है। इस प्रक्रिया को आर्बिट्रेज कहते है।

Mutual Funds :-



- Mutual Fund छोटे निवेशकों तथा शेयर बाजार के बीच मध्यस्थ का कार्य करते हैं।
- इन्हें निदक उदंहमत के द्वारा संचालित किया जाता है जो कि बाजारों के विशेषज्ञ होते हैं।
- ये अपनी विशेषज्ञता का प्रयोग करते हुए प्रतिभूतियों में निवेश करते हैं तथा लाभ कमाकर निवेशक को देते हैं।
- इसके बदले में निवेशक से फीस वसूलते हैं, और निवेशक को यूनिट आवंटित की जाती है।
- भारत का पहला Mutual Fund - UTI (Unit trust of India) 1964 में स्थापित किया गया।
- 1986 : SBI Mutual Fund (देश का दूसरा Mutual Fund)
- 1991 : निजी क्षेत्र को भी Mutual Fund स्थापित करने की अनुमति दी गई।
- 2001 : यूटीआई घोटाला उजागर हुआ।

Venture Capital Fund :-

- ये वैकल्पिक निवेश फण्ड के तहत आते हैं।
- इसमें संस्थागत निवेशकों के द्वारा निवेश किया जाता है
- ये जोखिम भरे क्षेत्रों में निवेश करते हैं। जैसे – Start-ups
- इन्हें फण्ड मैनेजर के द्वारा संचालित किया जाता है, जो कि बाजार के विशेषज्ञ होते हैं। ये लाभ की रणनीति सुनिश्चित करने के बाद ही निवेश करते हैं।

हैज फण्ड :-

- ये व्यक्तिगत निवेशक होते हैं जो कि जोखिम भरे क्षेत्रों में निवेश करते हैं। इन्हें Short selling, Arbitrage आदि की अनुमति होती है।
- ऐसे व्यक्तियों को High Networth Individual (HNI) कहा जाता है।
- न्यूनतम निवेश रु. 1 करोड़।
- हैज फण्ड के कारण शेयर बाजार में अधिक उतार-चढ़ाव आता है।

एंजेल निवेशक :-

- ये व्यक्तिगत निवेशक होते हैं जो व्यक्ति की प्रतिभा और विचार पर विश्वास करके स्टार्टअप में निवेश करते हैं।
- ये शैक्षिक व वित्तीय पृष्ठभूमि को अधिक महत्व नहीं देते हैं। **जैसे—** Apple कंपनी में माइक मार्कुला का निवेश (Apple कंपनी के संस्थापक – स्टीव जॉब्स)
- भारत में रतन टाटा व नारायण मूर्ति प्रमुख एंजेल निवेशक हैं।

Participatory Notes (P-Notes) :-

- ये विदेशी संस्थागत निवेशक के द्वारा भारतीय शेयर बाजार में खरीदे गये शेयर के विरुद्ध जारी किया जाता है।
- विदेशी निवेशक इसे खरीद सकते हैं उन्हें भारत में पंजीकरण करवाने की आवश्यकता नहीं है।
- इनका मूल्य शेयर की कीमतों से जुड़ा हुआ होता है।
- कुछ समय पहले ये अत्यधिक चर्चा में थे क्योंकि ऐसा माना जा रहा था कि P-Notes के माध्यम से भारतीय शेयर बाजार में काला धन या आपराधिक धन निवेश किया जा रहा है।

- वर्तमान में SEBI ने अपने नियमों को कठोर कर दिया है।

ADR (American Depository Receipt) :-

- यदि कोई अमेरिकी नागरिक/निवेशक, किसी विदेशी कंपनी के शेयर अमेरिकी शेयर बाजार से खरीदना चाहता है तब उस कंपनी के ADR खरीदे जा सकते हैं।
- ADR की कीमत शेयर की कीमतों से जुड़ी हुई होती है।

GDR (Global Depository Receipt) :-

- यदि कोई यूरोपीय नागरिक/निवेशक, किसी विदेशी कंपनी के शेयर खरीदना चाहता है तब उस कंपनी के जीडीआर खरीद सकता है।
- आईडीआर (Indian Depository Receipt) :- यदि कोई भारतीय नागरिक/निवेशक, किसी विदेशी कंपनी के शेयर खरीदना चाहता है तब उस कंपनी के आईडीआर खरीद सकता है। भारतीय शेयर बाजार में आईडीआर की खरीद व बिक्री की जाती है।

विभौतिकीकरण :-

- प्रतिभूतियों को इलेक्ट्रॉनिक रूप में जारी करने की प्रक्रिया को विभौतिकीकरण (डीमैटेरियलाइजेशन) कहा जाता है।
- पहले प्रतिभूतियाँ भौतिक (कागज के) रूप में जारी की जाती थी।

शेयर बाजार में निवेश करने के लिए दो प्रकार के खाते खोले जाते हैं—

1. **Trading Account :-** यह खाता शेयर की खरीद और बिक्री करने के लिए ब्रोकर (Broker) के पास खोला जाता है।
2. **Demat Account :-** यह खाता Depository (डिपोजिटरी) संस्था के पास खोला जाता है। इसमें शेयर को संगृहीत किया जाता है।

भारत की दो मुख्य डिपोजिटरी संस्थाएं :-

1. NSDL :- National Securities Depository Ltd :-

- **स्थापना :-** 1996
- **संस्थापक :-** एनएसई

2. CDSL :- Central Depository Services Ltd. :-

- **स्थापना -** 1999
- **संस्थापक -** बीएसई

भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (SEBI)

- **स्थापना -** 1988
- सेबी अधिनियम, 1992 द्वारा इसे वैधानिक शक्तियां प्रदान की गईं और यह स्वायत्त निकाय बन गया।

सेबी के कार्य :-

- यह प्रतिभूति और पूँजी बाजार की नियामक संस्था है।
- भारत में प्रतिभूति और पूँजी बाजार को विकसित करने की मुख्य जिम्मेदारी SEBI की है।
- पूँजी बाजार में कार्य करने वाली सभी संस्थाओं का पंजीकरण SEBI के द्वारा किया जाता है। **जैसे -** ब्रोकर, स्टॉक एक्सचेंज, डिपोजिटरी संस्था, म्यूचुअल फंड, क्रेडिट रेटिंग संस्थाएँ।
- निवेशकों के हितों की रक्षा SEBI के द्वारा की जाती है, विशेषकर छोटे निवेशकों के हित।
- शेयर बाजार में वित्तीय धोखाधड़ी को रोकने हेतु कार्य करती है। **जैसे :-** इनसाइडर ट्रेडिंग, पम्प और डम्प, फ्रंट रनिंग
- **वर्तमान सेबी अध्यक्ष :-** तुहीन कांत पांडे
- **नियुक्ति :-** भारत सरकार के द्वारा।
- **कार्यकाल :-** 03 वर्ष